सच्चा पैरोकार

कौन है?

सच्चा पैरोकार

कौन है?

sachchā pairokār kaun hai?

Who is a True Follower?
(Urdu—Hindi script)

© 2019 MIK
published and printed by
Good Word, New Delhi

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

कभी न कभी आपका ऐसे लोगों से ज़रूर वास्ता पड़ा होगा जो अपने आपको हज़रत ईसा के पैरोकार कहते हैं। यह लोग क्या मानते हैं? हुज़ूर का सच्चा पैरोकार कौन है?

माफ़ी हासिल

हुज़ूर के पैरोकार को पूरी माफ़ी हासिल है।

हर मुल्क में क़ानून होते हैं। इन क़वानीन को तोड़नेवाला मुजरिम समझा जाता है और उसे सज़ा दी जाती है। अल्लाह ने भी इनसान को क़ानून दिए। जब किसी ने हज़रत ईसा से पूछा कि अल्लाह का सबसे बड़ा हुक्म क्या है तो उन्होंने जवाब दिया,

> ‘रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान और अपने पूरे ज़हन से प्यार करना।’ यह

> अव्वल और सबसे बड़ा हुक्म है। और दूसरा हुक्म इसके बराबर यह है, ‘अपने पड़ोसी से वैसी मु-हब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।’ तमाम शरीअत और नबियों की तालीमात इन दो अहकाम पर मबनी हैं।
> (इंजील जलील, मत्ती 22:36-40)

यह क्यों सबसे अहम अहकाम हैं? इसलिए कि इनसे इनसान के लिए अल्लाह के तमाम क़वानीन निकले हुए हैं।[1]

क्या किसी ने कभी इन हुक्मों पर पूरा पूरा अमल किया है? हरगिज़ नहीं। कोई भी दियानतदारी से नहीं कह सकता कि उसने हर वक़्त ख़ुदा को अपने पूरे दिल से प्यार किया है। हम सब अकसर अपने आपको, अपनी दौलत को, अपनी ख़्वाहिशों को या किसी और चीज़ को अल्लाह की निसबत ज़्यादा प्यार करते हैं। हम अपने पड़ोसी से भी वैसी मुहब्बत नहीं रखते जैसी से। पड़ोसी से मुराद तमाम वह इनसान हैं जिनसे हमारा वास्ता पड़ता है। जिस इनसान ने इन अज़ीम क़वानीन को तोड़ा, वह अल्लाह के नज़दीक मुजरिम और दोज़ख़ का सज़ा वार है।[2]

लेकिन अल्लाह न सिर्फ़ आदिल है। वह रहीम भी है। वह नहीं चाहता कि इनसान उसके पाक हुक्मों को तोड़कर हलाक हो जाए।

---

[1]इंजील जलील, रोमियों 13:8-10
[2]इंजील जलील, रोमियों 6:23; मत्ती 25:45-46

इसलिए उसने उनके पास हज़रत ईसा के रूप में आकर उनके गुनाह की सज़ा अपने ऊपर ले ली। हज़रत ईसा गुनाहगारों की ख़ातिर मुआ। यों इंजील जलील में मरक़ूम है कि

> अल्लाह ने दुनिया से इतनी मुहब्बत रखी कि उसने अपने इकलौते फ़रज़ंद को बख़्श दिया, ताकि जो भी उस पर ईमान लाए हलाक न हो बल्कि अबदी ज़िंदगी पाए। (यूहन्ना 3:16)

हर इनसान ने ख़ुदा का क़ानून तोड़ा है। लेकिन जो मसीह पर ईमान लाता है वह अल्लाह से माफ़ी पाकर अबदी हलाकत से बच जाता है। जिस शख़्स को सज़ाए-मौत से रिहाई मिल गई हो, उसकी ख़ुशी की इंतहा नहीं होती। इसी तरह हुज़ूर के पैरोकार भी मुसलसल ख़ुशी मनाते और ख़ुदा की तारीफ़ करते हैं। क्योंकि अल्लाह ने उनके गुनाह हज़रत ईसा की सलीबी मौत पर ईमान लाने के बाइस माफ़ कर दिए हैं।

नया दिल हासिल

हुज़ूर के सच्चे पैरोकार को नया दिल अता किया गया है।

क्या वजह है कि इनसान अल्लाह के पाक हुक्मों को तोड़ते हैं? वह क्यों बदी को पसंद करके एक दूसरे से नफ़रत करते हैं? इसकी वजह यह है कि उनके दिल बुरे हैं।

जब अल्लाह ने इनसान को पहले पहल बनाया तो उसे एक नेक दिल अता किया था। लेकिन इनसान ने अल्लाह के हुक्म की नाफ़रमानी करके अपने दिल को बिगाड़ लिया। इसका नतीजा यह हुआ कि उसका दिल बदी की तरफ़ मायल है। अब उसके दिल से हर क़िस्म की बुराई निकलती है।[1] यही वजह है कि अगर ख़ुदा उसके गुनाह माफ़ कर ने के बावुजूद उसका दिल तबदील न करे तो वह बुरे काम करता ही रहेगा। उसको माफ़ कर देना ही काफ़ी नहीं था। लाज़िम था कि उसका दिल तबदील किया जाए।

इसलिए अल्लाह एक और अजीबो-ग़रीब काम करता है। वह ईमान लानेवालों के अंदर एक नया और नेक दिल पैदा कर देता है। आजकल माहिर डाक्टर मरीज़ों के नाकारा दिल निकालकर उनकी जगह सेहतमंद दिल लगा देते हैं। यह बहुत ही अजीब बात

[1]इंजील मुक़द्दस, मत्ती 15:18-20

है। लेकिन अल्लाह ने इससे भी अजीब काम किया। उसने अल-मसीह पर ईमान लानेवालों को नए रूहानी दिल दिए हैं ताकि वह इसके बाद बदी से नफ़रत और नेकी से मुहब्बत करें। वह ख़ुदा और दीगर इनसानों से मुहब्बत करें। हुज़ूर के सच्चे पैरोकार वह हैं जिनके दिल नए हैं।

इसका यह मतलब नहीं कि हुज़ूर के पैरोकार बेगुनाह होते हैं। मासिवा हज़रत ईसा के कोई भी बेगुनाह नहीं होता। लेकिन हुज़ूर के सच्चे पैरोकार गुनाह करना नहीं चाहते। वह अल्लाह की मदद से तमाम गुनाहों को छोड़ने की और ख़ुदा की फ़रमाँबरदारी करने की कोशिश करते हैं। और जब कभी कोशिश के बावुजूद भी उनसे गुनाह सरज़द हो जाता है तो वह अल्लाह से उसका इक़रार करते हैं, तौबा करते हैं और आइंदा उस गुनाह पर ग़ालिब आने के लिए ख़ुदा से मदद की दरख़ास्त करते हैं।

ग़रज़ जिनको अल्लाह ने नया दिल दिया है वह नए सिरे से पैदा हुए हैं और मसीह में नई मख़लूक़ हैं। उनकी यह ज़िंदगी आरिज़ी नहीं बल्कि अबदी है जिसे मौत ख़त्म नहीं कर सकती।[1]

[1] इंजील मुक़द्दस, यूहन्ना 3:3-8

हुज़ूर के साथ पैवस्त

हुज़ूर का सच्चा पैरोकार हुज़ूर के साथ पैवस्त रहता है।

एक बार हज़रत ईसा ने एक तमसील बताई[1] जिस में उन्होंने फ़रमाया कि मैं अंगूर की बेल हूँ और तुम बेल की शाख़ें हो। लाज़िम है कि तुम मुझ में क़ायम रहो और मुझसे हरगिज़ जुदा न हो। क्योंकि अगर तुम मुझसे जुदा रहोगे तो अंगूर की शाख़ों की तरह सूखकर मर जाओगे। लेकिन अगर तुम मसीह में क़ायम रहोगे तो ज़िंदा रहोगे और फल लाओगे। किस तरह का फल? मुहब्बत। तब तुम मुनासिब और लायक़ तौर पर हक़ तआला और इनसान की ख़िदमत बजा लाओगे।

[1] इंजील शरीफ़, यूहन्ना बाब 15

अल्लाह का फ़रज़ंद

हुज़ूर का सच्चा पैरोकार हक़ तआला का फ़रज़ंद है।

जो भी बच्चा इस दुनिया में पैदा होता है उसका बाप होता है। जब कोई अल्लाह के रूह के वसीले से नए सिरे से पैदा होता है तो वह किसका फ़रज़ंद होता है? हक़ तआला का रूहानी फ़रज़ंद।

याद रहे कि तब हम अल्लाह के ग़ुलाम नहीं होते। बेशक हर इनसान का फ़रज़ है कि वह अल्लाह की फ़रमाँबरदारी और ख़िद-मत करे। लेकिन हमें नया दिल अता करने से ख़ुदा फ़रमाता है कि “अब मैं तुम्हें ग़ुलाम नहीं कहता बल्कि तुम मेरे प्यारे फ़रज़ंद हो। अब से तुम मुझे बाप कहकर पुकार सकते हो।” इसी लिए हज़रत ईसा ने फ़रमाया कि हम दुआ करते वक़्त अल्लाह से कहें,

> ऐ हमारे आसमानी बाप, तेरा नाम मुक़द्दस माना जाए। (इंजील मुक़द्दस, मत्ती 6:9)

ऐसे दुआ करना कितना फ़ख़रो-नाज़ की बात है।

कहते हैं एक अज़ीम और हर दिल अज़ीज़ बादशाह एक दिन बाज़ार में से गुज़र रहा था। उसने एक अंधे यतीम को देखा जो चीथड़े पहने ज़मीन पर बैठा भीक माँग रहा था। बादशाह ने अपनी

गाड़ी रोकी, गाड़ी से बाहर निकला, लड़के के पास गया और उसे अपने दोनों हाथों से उठाकर गाड़ी में बिठा लिया। वह उसे अपने महल में ले गया, उसे नहलाया धुलाया, शाही पोशाक पहनाई और अपने दस्तरख़ान पर बिठाकर उससे कहा, “आज से तुम मेरे बेटे हो। अब तुम मेरे पास रहोगे और मैं तुम्हारा बाप हूँगा।” बादशाह ने भिकारी लड़के पर कितनी हैरतअंगेज़ मुहब्बत दिखाई!

लेकिन अल्लाह की मुहब्बत हम गुनाहगारों के लिए इससे भी ज़्यादा हैरानकुन है। जब हम बाग़ी, ख़ुदा के दुश्मन और उसके हुक्मों के नाफ़रमान थे तो उसने हम पर तरस खाया। हमें हमारे गुनाहों में बरबाद करने की बजाए उसने हमें माफ़ कर दिया।[1] उसने हमें हज़रत ईसा की तरह पाक और नेक बनने के लिए तबदील कर दिया और अपने साथ हमेशा रहने के लिए अपने आसमानी घर में जगह दी। हुज़ूर के पैरोकार अल्लाह के फ़रज़ंद हैं, मगर अपनी ख़ूबियों के बाइस नहीं बल्कि ख़ुदावंद के रहम के बाइस। यों इंजील शरीफ़ फ़रमाती है,

> अज़ीज़ो, अब हम अल्लाह के फ़रज़ंद हैं, और जो कुछ हम होंगे वह अभी तक ज़ाहिर नहीं हुआ है। लेकिन इतना हम जानते हैं कि जब वह ज़ाहिर हो जाएगा तो हम उसकी मानिंद होंगे। क्योंकि हम

[1] इंजील मुक़द्दस, रोमियों 5:6-10

> उसका मुशाहदा वैसे ही करेंगे जैसा वह है। जो भी मसीह में यह उम्मीद रखता है वह अपने आपको पाक-साफ़ रखता है, वैसे ही जैसा मसीह ख़ुद है। (इंजील जलील 1 यूहन्ना 3:2-3)

चूँकि हुज़ूर के पैरोकार अल्लाह के फ़रज़ंद हैं इसलिए वह अपने बाप की शान के शायाँ नेक और पाक ज़िंदगी बसर करने की कोशिश करते हैं।

हुज़ूर के ख़ानदान का फ़रद

> हुज़ूर का सच्चा पैरोकार आपके ख़ानदान का फ़रद होता है।

बाज़ औक़ात किसी ख़ानदान में सिर्फ़ एक ही बच्चा पैदा होता है। वह अकेला होता है और उसका कोई बहन भाई नहीं होता। यह बात हक़ तआला के फ़रज़ंदों पर सादिक़ नहीं आती, क्योंकि अल्लाह का ख़ानदान बहुत बड़ा है। आजकल दुनिया के कोने कोने में हुज़ूर के पैरोकार पाए जाते हैं। उन में बाज़ जवान हैं और बाज़ बूढ़े, बाज़ पढ़े-लिखे और बाज़ अनपढ़। बाज़ ग़रीब हैं और बाज़ अमीर। हर एक अपनी अपनी ज़बान में हक़ तआला को बाप कहता है। हर एक हुज़ूर के दूसरे पैरोकारों को बहन भाई समझता

है। अगर वह एक दूसरे के साथ बातचीत न भी कर सकें फिर भी अपने आपको एक दूसरे के बिलकुल क़रीब महसूस करते हैं। क्योंकि वह अल्लाह के फ़रज़ंद हैं।

अल्लाह और दूसरों का ख़ादिम

हुज़ूर का पैरोकार ख़ुदा और इनसान की ख़िदमत करता है।

जब कोई हम पर मेहरबानी करता या हमें तोह्फ़ा देता है तो हम इसके एवज़ कुछ देने की कोशिश करते हैं। या तो हम भी उसे तोह्फ़ा देते हैं या उसकी कोई और ख़िदमत करते हैं। लेकिन जिसके गुनाह अल्लाह ने माफ़ कर दिए हैं वह इसके एवज़ क्या कुछ दे सकता है? सिवाए अपने दिल, दिमाग़, हाथ-पाँव और ज़बान के वह ख़ुदावंद को और कुछ नहीं दे सकता। हक़ तआला तो हमें अपनी बख़्शिशों से नवाज़ता रहता है। हज़रत ईसा ने हमें अपने ख़ून से ख़रीदा। इसके एवज़ हम क्या दे सकते हैं?

हुज़ूर का सच्चा पैरोकार अपने आक़ा हज़रत ईसा के नक़्शे-क़दम पर चलता है। वह न सिर्फ़ अपने हमख़याल दोस्तों और भाइयों को बल्कि दुश्मनों को भी प्यार करने की कोशिश करता है। वह तमाम नसलों और मज़हबों से ताल्लुक़ रखनेवालों की

ख़िदमत करने को तैयार होता है। हज़रत ईसा ने फ़रमाया कि शागिर्दों की बाहमी मुहब्बत उनका इम्तियाज़ी निशान होगी। इसी से लोग पहचानेंगे कि वह उनके शागिर्द हैं। सच्ची मुहब्बत सिर्फ़ लफ़्ज़ों से ज़ाहिर नहीं होती बल्कि एक दूसरे की ख़िदमत ही से।

हक़ तआला की गहरी ख़्वाहिश यह है कि तमाम लोग हज़रत ईसा को जानकर उन पर ईमान लाएँ। यह ज़िम्मेदारी हुज़ूर के पैरोकारों पर आइद की गई है। उन्हीं को यह एज़ाज़ हासिल है कि वह दूसरों को हज़रत ईसा से तआरुफ़ कराएँ, उन्हें उन पर ईमान लाने और अल्लाह के फ़रज़ंद बनने की दावत दें। जब कोई हज़रत ईसा को प्यार करता है वह दुनिया के हर बशर को अल्लाह की मुहब्बत की ख़ुशख़बरी बताने के लिए सरगरम होता है।

ग़रज़, कौन हुज़ूर का सच्चा पैरोकार है?

- वह जिसे माफ़ी हासिल है,
- वह जिसे नया दिल हासिल है,
- वह जो हुज़ूर के साथ पैवस्त रहता है,
- वह जो अल्लाह का फ़रज़ंद है,
- वह जो हुज़ूर के ख़ानदान का फ़रद है,
- वह जो इनसान और अल्लाह की ख़िदमत करता है।